अंतरपीढ़ी संबंध शरणार्थी और आप्रवासी पृष्ठभूमियों से आने वाले युवा लोगों पर कैसे दबाव डालते हैं

पिछले साल हमने अपने अगले यंग थिंकर इन रेज़िडेंस की खोज करने के लिए ऑफिस फॉर यूथ के साथ मिलकर काम किया। हमने अपने यंग थिंकर से 'अंतरपीढ़ी संबंधों' के बारे में एक पक्षसमर्थन परियोजना बनाने के लिए कहा।

हैरी कोलिन ने हमें अपने उत्साह और विचारों के साथ आप्रवासी और शरणार्थी समुदायों में शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में चर्चाओं का निर्माण करने के बारे में बताया।

हैरी ने कई युवा संगठनों के साथ बात की और शिक्षा व मानसिक स्वास्थ्य के बारे में आप्रवासी और शरणार्थी समुदायों से आने वाले माता-पिता और युवा लोगों के विचार जानने के लिए उनसे मुलाकात की। हैरी को जो जानकारी मिली, उसके बारे में जानने के लिए हमने हैरी के साथ बैठकर बात की।

हैरी, हमें अपने बारे में थोड़ा कुछ बताएँ और यह भी बताएँ कि एक यंग थिंकर बनने में आपकी रुचि कैसे पैदा हुई?

हैरी: मेरा नाम हैरी है और मैं वियतनामी मूल का एक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक हूँ। जब मैं दोहरी पहचान नेतृत्व कार्यक्रम में हिस्सा ले रहा था, तो यह बात मेरे सामने आई। यह कार्यक्रम वियतनामी समुदाय ऑस्ट्रेलिया (विक्टोरिया चैप्टर) द्वारा आयोजित किया जाने वाला एक युवा नेतृत्व कार्यक्रम है और इसमें हमने परिवार के सदस्यों के बीच उनके आपसी व्यवहार के बारे में बात की। अपने परिवार के साथ मेरा अनुभव और मेरी निर्णय लेने की प्रक्रिया दूसरों से काफी अलग थी - इस बात को जानकर वास्तव में मुझमें दिलचस्पी पैदा हुई। मैंने पढ़ाई-लिखाई, नौकरी आदि के संबंध में अपने बारे में खुद निर्णय लेने को हमेशा प्राथमिकता दी है, लेकिन दूसरी शरणार्थी और आप्रवासी पृष्ठभूमियों से आने वाले कुछ युवा लोगों के लिए ऐसा नहीं था।

आप विक्टोरिया में शरणार्थी और आप्रवासी समुदायों से आने वाले बहुत से लोगों के साथ अंतरपीढ़ी संबंधों के बारे में बात कर रहे हैं। क्या आप हमें बता सकते हैं कि आप किस तरह के लोगों से बात कर रहे हैं?

हैरी: मैं फिलिपिनो, भारतीय और बाँग्लादेशी पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों समेत बहुत से अन्य विविध समुदायों के लोगों से बात कर रहा हूँ। मैंने इतालवी और ग्रीक जैसी भूमध्यसागरीय पृष्ठभूमियों से आने वाले कुछ माता-पिता के साथ बात की। मैंने ज़्यादातर युवा महिलाओं का साक्षात्कार लिया है, और माता-पिता के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं - दोनों के साथ बात की है।

सभी युवा लोग अपने परिवारों और समुदायों से कभी-कभी उम्मीदों का दबाव महसूस करते हैं, लेकिन आपने पाया कि शरणार्थी और आप्रवासी पृष्ठभूमि से आने वाले युवाओं के लिए यह दबाव बहुत ही ज़्यादा था। युवा लोग जीवन के किस क्षेत्र में सबसे ज़्यादा दबाव महसूस करते हैं?

हैरी: मेरे साक्षात्कारों में युवा लोगों ने सबसे पहले शिक्षा के बारे में बात की। जब मैंने आप्रवासी और शरणार्थी पृष्ठभूमियों के माता-पिता से बात की, तो उन्होंने भी अक्सर शिक्षा का मुद्दा सामने रखा – यहाँ तक कि दूसरी पीढ़ी के माता-पिता ने भी।

माता-पिता या बुजुर्ग लोग युवाओं को उनकी शिक्षा के बारे में प्रोत्साहित करने के लिए क्या तरीके अपनाते हैं?

हैरी: मैंने जिन लोगों का साक्षात्कार किया, चाहे उनकी उम्र या साँस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, उनमें से बहुत से लोगों ने कहा कि उनके माता-पिता और/या बुजुर्ग शिक्षा को सबसे पहली प्राथमिकता मानते हैं। कुछ लोगों के लिए युवाओं के जीवन का प्रमुख निर्धारक शिक्षा है, जिसमें माता-पिता अपने बच्चों द्वारा चुने गए विकल्पों को - 'क्या इससे मेरे बच्चों की शिक्षा/नौकरी के परिणामों पर प्रभाव पड़ेगा?' - इस लेंस के माध्यम से देखते हैं। माता-पिता अक्सर मानते हैं कि उनके बच्चों का भविष्य उनके चुने गए शिक्षा के विषयों पर निर्भर करता है। यही कारण है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा में सशक्त राय देना चाहते हैं।

एक साक्षात्कार में मुझे उत्तर मिला कि वे अन्य अवसरों पर विचार करने के बारे में सोच ही नहीं सकते थे। यह दुविधा माता-पिता की अपने बच्चों के बारे में चिंता करने की प्रवृत्ति के कारण हो सकती है। माता-पिता नहीं चाहते हैं कि उनके बच्चों को जीवन में संघर्ष करना पड़े और उनके बच्चों को उन्हीं संघर्षों से जूझना पड़े जिनका सामना उन्होंने स्वयं किया था। इसलिए जब बच्चे अपने कैरियर के लिए कोई ऐसे रास्ते चुनते हैं जिनके बारे में उनके माता-पिता ने विचार ही नहीं किया था, तो माता-पिता को इन रास्तों में मिलने वाले अवसरों को देख पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

उस समय मानों वे कह रहे होते हैं - “हम वास्तव में यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि तुम खुद को स्थापित करने के लिए सही निर्णय ले रहे हो, ताकि तुम्हें उस तरह से संघर्ष न करना पड़े जैसे हमने किया था’।

- युवा श्री लंकाई महिला

यदि हम इस बारे में सोचें कि माता-पिता ऐसा दृष्टिकोण क्यों अपनाते हैं, तो हमें यह देखना चाहिए कि इनमें से कुछ माता-पिता अपने जीवन में बड़े कैसे हुए थे और उनकी परवरिश कैसी थी।

"मैं सोचती हूँ कि शिक्षा प्रणाली कितनी अलग है... खुद प्रणाली ही... लेबनान में बच्चों को 12वीं कक्षा में 13 विषय पढ़ने होते हैं... और यदि कोई एक भी विषय में फेल हो जाए, तो उसे अनिवार्य रूप से पूरा साल दोहराना होता है।"

- युवा लेबनानी महिला

कुछ युवा लोग अपने माता-पिता के दबाव और कठोर अपेक्षाओं के कारण अन्य अवसरों के बारे में सोचने या वैकल्पिक मार्गों की खोज करने में बहुत अधिक असमर्थ हो सकते हैं। एक सर्बियाई/ग्रीक पुरुष ने - जिसका मैंने साक्षात्कार किया - यह टिप्पणी की कि उसने अपने दोस्तों को विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए केवल इसलिए जाते हुए देखा क्योंकि उनके माता-पिता चाहते थे कि उनके बच्चे विश्वविद्यालय की पढ़ाई करें, चाहे उनके बच्चे इससे खुश हों या नहीं अथवा विश्वविद्यालय की पढ़ाई के लिए उनकी अभिवृत्ति हो या नहीं।

“यूरोपीय पृष्ठभूमि से आने के कारण मुझे लगता है कि माता-पिता की मानसिकता और सोचने का तरीका वास्तव में अलग है। हाँ, इसपर हँसी आती है। वे उम्मीद करते हैं कि उनके बच्चे विश्वविद्यालय की पढ़ाई करेंगे। उन्हें लगता है कि विश्वविद्यालय उनके बच्चों के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।”

- युवा सर्बियाई/ग्रीक पुरुष

यह बात सामने रखना महत्वपूर्ण है कि शरणार्थी और आप्रवासी पृष्ठभूमियों से आने वाले सभी परिवार और माता-पिता बहुत कठोर या वास्तविकता से परे उम्मीदें नहीं रखते हैं। एक साक्षात्कार में मुझे एक महिला ने बताया कि उसने किस प्रकार से शरणार्थी या आप्रवासी परिवारों से आने वाले अनेकों वीसीई छात्र/छात्राओं को ट्यूशन पढ़ाया और ऐसे माता-पिता से बात की जो बस इतना ही चाहते थे कि उनके बच्चे एटीएआर हासिल करें और वे इसे अपने में ही एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखते थे।

‘मैं बस इतना ही चाहता हूँ कि तुम एटीएआर हासिल करो। अगर तुम्हें एटीएआर मिल जाए, तो तुमने बहुत कुछ हासिल कर लिया हैI’

- वीसीई के प्रति कुछ माता-पिता के रवैये को याद करते हुए एक युवा महिला।

क्या यह इस बारे में है कि माता-पिता छात्र/छात्राओं के पढ़ाई के विषयों के बारे में सशक्त राय रखना चाहते हैं?

हैरी: कुछ माता-पिता विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के मार्ग के रूप में विषयों को देखते हैं; खासकर चिकित्सा की पढ़ाई। शरणार्थी और आप्रवासी पृष्ठभूमियों से आने वाले कुछ माता-पिता अपने बच्चों को गणित और विज्ञान के विषय लेने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इन विषयों की पढ़ाई करने से उनके बच्चों के लिए चिकित्सा के क्षेत्र में प्रवेश करने की संभावना बेहतर हो पाएगी।

“उनकी स्थिति बहुत अलग थी। उन्हें (माता-पिता) को ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया था और उनके पास कोई विकल्प ही नहीं था... या तो आप चिकित्सा की पढ़ाई करेंगे या अपनी विज्ञान और गणित की पढ़ाई का प्रयोग करेंगे (कुछ और बनने के लिए)।"

- युवा लेबनानी महिला

मेरे साक्षात्कारों के दौरान कई युवा लोगों ने बताया कि उनके माता-पिता उन्हें या उनके भाई को डॉक्टर बनाना पसंद करेंगे।

एक महिला ने साक्षात्कार में मुझे यह उत्तर दिया कि उसकी माँ चाहती थी कि वह गणित के विषय पढ़े क्योंकि वह अपनी बेटी को डॉक्टर बनाना चाहती थी: “यदि आप एक डॉक्टर हैं तो आपको कहीं भी काम मिल सकता है और यह बहुत ही सुरक्षित क्षेत्र है क्योंकि लोग हमेशा बीमार पड़ते रहते हैं।"

अन्य साक्षात्कारों में उत्तर मिले कि उनके विषयों के चयन में उनके माता-पिता की राय बहुत अधिक मायने नहीं रखती थी, अक्सर इसलिए क्योंकि उनके माता-पिता के समय में स्कूल और पढ़ाई इतने सुलभ नहीं थे। इसकी वजह से कुछ माता-पिता अपने बच्चों के शैक्षणिक कैरियर का निर्धारण करने के लिए स्कूल पर बहुत अधिक निर्भर करते थे। एक साक्षात्कार में दूसरी पीढ़ी के एक इतालवी-ऑस्ट्रेलियाई पिता ने इस बारे में बात की कि उनके माता-पिता किस प्रकार से उनकी स्कूली शिक्षा में शामिल नहीं हो पाए, 'क्योंकि कि वे बहुत अच्छी तरह से अंग्रेज़ी नहीं जानते थे और उन्हें अपने घर की किश्तों का भुगतान करने के लिए बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी।'

किताबें रखने के दो तख्तों के बीच से दूर जाता हुआ एक व्यक्ति।

तो क्या नाटक या कला की पढ़ाई करने की इच्छा रखने वाले बच्चों के लिए यह थोड़ा कठिन होता है?

हैरी: मुझे ऐसा महसूस होता है कि कुछ माता-पिता इसे अपने बच्चों और कुछ हद तक अपने और अपने परिवार के लिए बर्बादी का रास्ता मानते थे। एक साक्षात्कार में मुझे एक युवक ने बताया कि उसके पिता ने अपने बेटे के लिए चिंता व्यक्त करते हुए कहा था, "वह रेल की पटरी से उतर रहा है... वह अभी कक्षा 8 में है और नाटक की पढ़ाई करना चाहता है।"

जब किसी युवा व्यक्ति द्वारा स्वयं चुने गए पढ़ाई के विकल्पों के परिणाम उसके लिए अच्छे नहीं निकलते हैं, तो इस बात का डर रहता है कि उसके माता-पिता इस असफलता को एक विकराल रूप देंगे - ‘मैंने तुम्हें पहले ही कहा था’ - इस तरह की बातें। इसके अलावा उस युवा व्यक्ति के लिए वही लक्ष्य हासिल करने के लिए वैकल्पिक रास्तों से आगे बढ़ना कठिन हो सकता है।

कभी-कभी युवा व्यक्ति यह निर्णय ले सकता है कि वह आगे की शिक्षा प्राप्त करना चाहता है, लेकिन इससे पहले वह एक वर्ष का अंतराल लेना चाहता है। कुछ माता-पिता इस अंतराल को असफलता के संकेत के रूप में देख सकते हैं और वे अपने बच्चे की इस इच्छा को समर्थन नहीं देते हैं। दुर्भाग्य से कुछ बच्चों के माता-पिता यह समझने के लिए संघर्ष करते रहते हैं कि उनके बच्चों ने बाद के वर्षों में एक अलग रास्ता अपनाने का विकल्प क्यों चुना।

आपके विचार से माता-पिता को इस बारे में अपनी राय बताना इतना ज़रूरी क्यों लगता है कि उनके बच्चे क्या पढ़ाई कर रहे हैं और कौन सी नौकरी करते हैं?

हैरी: इसका एक पहलू डर है। यह डर कई बातों पर आधारित हो सकता है। यह माता-पिता के अपने अनुभवों से पैदा हो सकता है, क्योंकि उन्हें अपने समय में रोजगार, भोजन, स्थाई सरकार और शिक्षा जैसी समुचित सेवाएँ उपलब्ध नहीं थी और उनकी प्रवास की यात्रा बहुत कठिन थी और उन्हें सुरक्षा की आवश्यकता थी। यह सब उनके अपने व्यक्तिगत इतिहास और जीवंत अनुभवों से पैदा होता है।

समुदाय में कई तरह के सामाजिक दबाव भी होते हैं। कई साक्षात्कारों में लोगों से ये उत्तर मिले कि उनके परिवार के कुछ सदस्य और दोस्त अपने बच्चों की सफलता के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बताना पसंद करते हैं और काफी अधिक तुलनाएँ करते हैं और यह सब अपने सम्मान और अपनी प्रतिष्ठा बचाने के बारे में है। इससे माता-पिता, और साथ ही उनके बच्चों के आत्म-सम्मान पर प्रभाव पड़ता है, और उन्हें बहुत अधिक शर्मिंदगी महसूस हो सकती है।

एक साक्षात्कार में एक सूडानी महिला ने बताया कि उसके माता-पिता अपनी सँस्कृति से जुड़े हुए हैं; उनके परिवार का घर पारंपरिक रूप से सूडानी है और विदेशों में स्थित उनके रिश्तेदारों के घरों के समान है। उसने यह टिप्पणी की कि सूडानी सँस्कृति में ‘पदानुक्रम’ बहुत अधिक होता है, इसलिए उसके माता-पिता अपने बच्चों के जीवन में काफी अधिक राय रखने की उम्मीद करते हैं। इसके लिए उसने इस तथ्य को जिम्मेदार ठहराया कि वे पहली पीढ़ी के ऑस्ट्रेलियाई नागरिक हैं।

क्या माता-पिता दबाव महसूस करते हैं?

हैरी: हाँ। जब मैंने तीसरी पीढ़ी के एक इतालवी-ऑस्ट्रेलियाई नागरिक से बात की, तो उसने बार-बार कहा कि उसकी नोन्ना को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान स्कूल जाने का अवसर कभी नहीं मिला। और इसलिए अपनी नोन्ना की कहानी से नाती-पोतों को सफल बनने के लिए प्रेरणा मिली। हमारे माता-पिता और दादा-दादी को ऐसे अवसर कभी मिले ही नहीं जो आज उपलब्ध हैं, इसलिए वे चाहते हैं कि उनके बजाए उनके बच्चों को अब ये अवसर मिलें। कुछ माता-पिता अलग सँस्कृति और ऑस्ट्रेलियाई समाज के ढाँचे से अभिभूत महसूस कर सकते हैं, और उन्हें अपने लक्ष्यों व अपने बच्चों के लक्ष्यों के बीच एक संतुलन की खोज करनी होगी।

शरणार्थी या आप्रवासी पृष्ठभूमियों से आने वाले माता-पिता जिस शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणाली के साथ बड़े हुए होंगे, उसकी तुलना में ऑस्ट्रेलिया में यह प्रणाली बहुत अलग है, और इसके साथ ही वे रोजगार के बारे में कुछ बहुत ही अलग तरह के विचारों के साथ बड़े हुए होंगे। यह अंतर इस बात को कैसे प्रभावित करता है कि वे अपने बच्चों के साथ उनके भविष्य के बारे में किस तरह से बात-चीत करते हैं?

हैरी: एक साक्षात्कार में एक सर्बियाई/ग्रीक पुरुष ने अपने परिवार और समुदाय के रोजगार के प्रति दृष्टिकोण के बारे में कुछ टिप्पणियाँ की।

"यह वहाँ की सँस्कृति है कि सर्बियाई लोग कड़ी मेहनत से काम करते हैं, काम, काम, काम, काम।"

और मुझे लगता है कि यह उम्मीद सर्बियाई लोगों के अंदर हमेशा मौजूद रहती है: कड़ी मेहनत से काम करो, काम, काम, काम, काम, काम।”

उस युवक ने यह भी बताया कि उसने अपने समुदाय में कई सर्बियाई पिताओं को कड़ी मेहनत से काम करते हुए देखा है। वे सप्ताह में सातों दिन काम करते हैं और शायद ही कभी घर पर मौजूद रहते हैं। इसके कारण जब युवा लोगों के रोजगार के बारे में बातचीत करने का समय होता है, तो इसमें बहुत मुश्किल होती है। उदाहरण के लिए उस युवक ने अपने परिवार से कहा कि वह अपने परिवार की उम्मीदों के साथ-साथ ’कुछ अलग’ भी करना चाहता था। उसके दादाजी इस मानसिकता में फंसे हुए थे, 'नही, तुम्हें काम करना है या ऐसा करना है या विश्वविद्यालय में पढ़ाई करनी है'। परंतु युवक के माता-पिता दूसरी पीढ़ी के ऑस्ट्रेलियाई नागरिक थे और युवक ने कहा कि उसके माता-पिता इस मामले में कुछ नरमी दिखाते हैं।

एक साक्षात्कार में दूसरी पीढ़ी के एक ग्रीक-ऑस्ट्रेलियाई नागरिक ने, जोकि एक पिता भी हैं, यह सोचते हुए कहा कि जब वह बढ़े हो रहे थे, तो "मुझसे पढ़ाई के साथ काम करने की कोई उम्मीद नहीं की गई थी", मेरा काम वास्तव में पढ़ाई करना है और अच्छा प्रदर्शन दिखाना है और मुझे सबसे अच्छे अंक पाने हैं।

क्या युवा लोगों को अपने माता-पिता को यह यह बात समझाने की कोशिश करने और उनकी सहायता करने की आवश्यकता है कि ऑस्ट्रेलिया में अलग तरीके से कैसे काम किया जाता है? क्या वे अपने माता-पिता को समझाने की कोशिश कर रहे हैं, "यहाँ पर आपके तरीके से काम नहीं किया जाता है"?

हैरी: हाँ, विशेषकर जब वे वीसीई और एटीएआर प्रणाली को समझाने की कोशिश करते हैं। मैंने एक लेबनानी महिला से बात की जो अपने माता-पिता को अपने वीसीई परिणाम समझाने की कोशिश कर रही थी।

उसे व्यवसाय प्रबंधन में 40 अंक मिले थे, और उसके दादाजी मानों कह रहे थे, "बाकी के दस कहाँ गए?" उन्हें यह नहीं पता था कि 40 का अर्थ है कि वह राज्य के सर्वोच्च 8 प्रतिशत में थी (बहुत ही अच्छा प्रदर्शन!), और अक्सर इन छात्र/छात्राओं को सबसे ऊँचे स्तर के विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते हुए देखा जाता है और जो कोर्स वे पढ़ना चाहते हैं, उसी का चयन भी करते हैं। तनाव-भरे समय में इन बच्चों के लिए अपने माता-पिता को यह प्रणाली समझाना बहुत कठिन होता है।

एक युवा पुरुष एक हाथ से अपने सिर को पकड़े लैपटॉप के सामने तनावग्रस्त होकर बैठता है।

और युवा लोगों पर इस दबाव का क्या प्रभाव पड़ता है?

हैरी: यह युवा लोगों की अपने खुद के व्यक्तित्व को अपनाने की क्षमता को प्रभावित करता है। ऐसे कई दबावों के परिणामस्वरूप बहुत से युवा लोग बस अपने माता-पिता के कदमों पर ही चलने का निर्णय ले सकते हैं, उनके सामने यह प्रश्न खड़ा हो सकता है - "क्या बातचीत या समझौता करना संभव है?" - लेकिन यदि नहीं, तो इससे घर में दरार पैदा हो सकती है। मैं एक युवा फिलिपिनो महिला का साक्षात्कार कर रहा था, जिसके पिता अक्सर उसे ‘नहीं’ कहते थे। इससे घर में तनावपूर्ण माहौल बन गया था और इससे उसके कल्याण को भी नुकसान पहुँचा। मैंने एक युवा अफ्रीकी महिला का साक्षात्कार भी किया, और चूंकि उसके माता-पिता उसे बाहर जाने से मना करते रहते थे, इसलिए अंत में उसके दोस्तों ने उसे आमंत्रित करना बंद कर दिया। इनमें से कुछ युवा लोगों को अपने आयु-वर्ग के दोस्तों के समर्थन का महत्व नहीं सिखाया जाता है। इससे उनके विकास और उनके मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है और उनके भविष्य के अवसर सीमित हो सकते हैं।

इसके साथ ही यह असर लंबे समय तक बना रह सकता है और आरंभिक वयस्कता के वर्षों के बाद भी बरकरार रह सकता है।

"कई सालों तक [पहचान की] खोज करना एक संघर्ष बना रहा, जिसे दूर करने में कई साल लगे और... यह बहुत मुश्किल है।"

– भारतीय-ऑस्ट्रेलियाई माता, जो बचपन में ऑस्ट्रेलिया आई थी

आपके विचार से क्या स्कूल अथवा युवा सेवाएँ कुछ अलग तरह से काम कर सकते हैं, जिससे युवा लोगों और उनके परिवारों को इस कठिन मैदान से गुज़रने में सहायता मिल सके?

हैरी: मेरे विचार से स्कूलों और युवा सेवाओं को पहले इस बात को मूल्य देने की आवश्यकता है कि माता-पिता और उनके बच्चों के बीच संबंध गतिशील हो सकते हैं। माता-पिता और युवाओं, दोनों के विचार सुने जाने की आवश्यकता होती है।

शिक्षकों के लिए अपने छात्र/छात्राओं को स्वायत्तता देने, और साथ ही उनके माता-पिता को अपनी राय देने के लिए एक संतुलन बनाने की आवश्यकता है। मेरे साथ बात करने वाली एक छात्रा ने मुझे बताया कि वह गणित से जूझ रही थी और उसके माता-पिता ने उसके लिए विषय चुने थे। पर दूसरे विषयों में उसका प्रदर्शन बहुत ही अच्छा था। उसकी माँ के सामने प्रधानाध्यापक को हस्तक्षेप करना पड़ा और उन्होंने कहा, "वह गणित के इतने सारे विषय नहीं कर सकती है क्योंकि वह उन सभी में फेल हो जाएगी।" यदि माता-पिता की पसंद उनके बच्चों की पढ़ाई और कल्याण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, तो शिक्षकों को इसमें हस्तक्षेप करना पड़ सकता है।

\*इस ब्लॉग में युवा/साक्षात्कारों के उत्तर देने वाले लोग शरणार्थी और प्रवासी पृष्ठभूमियों से आने वाले किशोरावस्था के अंतिम वर्षों से लेकर 20 के मध्य-दशक की आयु के युवा लोग हैं।

YACVic द्वारा

20 जून 2019